B.A-I (Hons)
Paper-I
Unit-I

Topic - Questionnaire Method

प्रश्नावली विधि

निश्चित या सीमित एकांशवाली प्रश्नावली के कुछ गुण है जो निम्नांकित है -

(i) निश्चित या सीमित अनुक्रिया वाले एकांशो या प्रश्नों का प्राप्तांक लेखन करना तथा कूटबद्ध करना काफी आसान होता है। कूटबद्ध करना एक ऐसी प्रक्रिया को कहा जाता है जिसमें शोधकर्ता अनुक्रियाओं को एक-दूसरे से अलग करने तथा उनका सांख्यिकीय विश्लेषण करने के ख्याल से विशेष अंक प्रदान करता है। जैसे, जनता दल के प्रति अनुक्रिया के लिए 1, भारतीय जनता दल के प्रति अनुक्रिया के लिए 2, तथा कांग्रेस (ई) के प्रति अनुक्रिया के लिए 3 देकर शोधकर्ता प्रत्यर्थी द्वारा दिये गये उत्तरों का कूटबद्धकरण कर सकता है। इससे एक विशेष फायदा यह होता है कि बाद में शोधकर्ता उसके आधार पर विशेष सांख्यिकीय विश्लेषण आसानी से कर पाता है।

(ii) निश्चित या सीमित अनुक्रिया वाले एकांशो या प्रश्नों में प्रत्यर्थी को कुछ लिखना नहीं पड़ता है। वह सिर्फ दिये गये उत्तरों में से जिसे वह सही उत्तर समझता है, पर एक चिन्ह लगाकर अपनी अनुक्रिया व्यक्त कर देता है। इससे विशेषकर उस प्रत्यर्थी को अधिक लाभ पहुँचता है जो किसी कारण से अपनी विचार को शाब्दिक रूप से व्यक्त करने में असमर्थ होता है।

(iii) निश्चित या सीमित अनुक्रिया वाले प्रश्न का उत्तर देने में कम समय लगता है। अगर ऐसे प्रश्नों या एकांशो वाली प्रश्नावली यदि लम्बी भी हो, तो प्रत्यर्थी उनका उत्तर देने में उतना समय नहीं लेते जितना कि एक ऐसी प्रश्नावली के प्रश्नों का उत्तर देने में वे लेते है जिनके उत्तर देने के लिए कुछ लिखित शब्दों या लिखित वाक्यों का प्रयोग अनिवार्य होता है।

इन गुणों के बावजूद निश्चित या सीमित अनुक्रिया वाले प्रश्नों के कुछ अवगुण भी है जो निम्नांकित है -

(i) निश्चित या सीमित अनुक्रिया वाले प्रश्नों का एक मुख्य अवगुण यह बतलाया गया है कि अक्सर शोधकर्ता प्रत्यर्थी के सामने सभी तर्कपूर्ण एवं संगत विकल्पों को नहीं रख पाते है।

इसका प्रमुख कारण यह होता है कि शोधकर्ताओं को प्रत्येक अनुक्रिया विकल्पों को सामान्यतः एक सीमित संख्याओं जैसे दो, तीन या चार में व्यक्त कर देना होता है और इन विकल्पों में वे सही तरह के संगत विकल्पों को ढूंढने में अक्सर असमर्थ रहते हैं। फलस्वरूप, शोधकर्ता को ऐसे प्रश्नों के उत्तरों या अनुक्रियाओं से जो सूचनाएँ मिलती हैं, वे अधिक वैज्ञानिक या तर्कसंगत नहीं रह जाती हैं।

(ii) निश्चित या सीमित अनुक्रिया वाले प्रश्नों में प्रत्यर्थी प्रायः द्रुत गति बनाये रखने के ख्याल से प्रश्नों के दिये गये अनुक्रिया विकल्पों को ठीक से पढ़े बिना ही किसी अनुक्रिया पर चिन्ह या टिक लगाकर उत्तर दे देता है। इस प्रकार की अनुक्रिया धृति विशेषकर उन प्रश्नावलियों में अधिक देखने को मिलता है जिनकी लम्बाई अधिक होती है यानी जिसमें प्रश्नों की संख्या अधिक होती है।

To be Continued